वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2020

- नीच सुख अनुराग पागल बनाते हैं
- देवाश्रम लहौर में पति पत्नी व्रत का साधन
- महोत्सव में आकर
- नारकीय घर कैसे स्वर्ग बन गया
- देव समाज का अनोखापन कहां है?
- माता – पिता संतान दिवस
- भाई भग्नि ब्रत की सभा
- संगरूर में विशेष सत्संग
- आइए दोस्ती छोड़ें, नफरत करें

हम खुश कैसे रह सकते हैं?

खुशी और गम सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं, जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जीवन दुखों और कठिनाईयों से भरा हुआ है, परन्तु उन कठिनाईयों को दूर करके ही हमें सच्ची खुशी मिल सकती है। दुख से भागकर कभी सच्ची खुशी नहीं मिल सकती है।

हमें धन प्राप्ति में सुख मिलता है, परन्तु धन प्राप्त करने के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। यदि कोई विद्यार्थी डाक्टर, इंजीनियर बनने में खुशी ढूंढता है, तो उसे दिन रात एक करके मेहनत करनी पड़ती है। इस प्रकार बहुत से भौतिक सुख हैं जो हम प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु कोई भी सुख मेहनत के बिना नहीं मिलता प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए, उच्च पद प्राप्त करने के लिए मनुष्य रात दिन मेहनत करता है और मेहनत करने वालों को किसी सीमा तक वह प्राप्त भी हो जाते हैं। परन्तु क्यों समय के साथ यह खुशी कम हो जाती है? भरपूर पैसा और शोहरत रखने वाले जन भी क्यों दुखी हो जाते हैं और यहां तक कि आत्म हत्या तक कर लेते हैं जैसे मर्लिन मुनरों के पास शोहरत और पैसे की कमी नहीं थी, फिर भी उसने निराशा में घिर कर अपनी जिन्दगी खत्म कर दी। एक समय में अदाकारी के क्षितिज पर सबसे अधिक चमक दिखाने वाली मीना कुमारी ने निराशा से घिरकर अपने आपको शराब में डुबो दिया।

निराशा हमारी असन्तुष्ट इच्छाओं के कारण पैदा होती है। भौतिक, विलासपूर्ण, और अंहकार पर आधारित खुशीयां हमें अधिक समय तक खुश नहीं कर सकती। एक नशा करने वाला व्यक्ति आरम्भ में नशे से खुशी प्राप्त करता है, धीरे-धीरे नशे की मात्रा बढ़ती जाती है, जिससे वह निराशा, रोग और मौत को प्राप्त होता है।

मनोचिकित्सक सिकजेंट मीहाली ने 30 वर्ष इस प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने में गुजारे कि मनुष्य को खुशी किस चीज़ से मिलती है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि खुशी खरीदी भी नहीं जा सकती, यह तो एकाग्रता की वह अवस्था है, जिसमें हम अपने काम में पूरी तरह खो जाते हैं।

पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में दर्शन ाास्त्र के प्रोफैसर सिलिगमैन का मानना है के अपने ध्यान को नकारात्मिक गतिविधियों से हटाकर सकारात्मिक गतिविधियों में केन्द्रित रखा जाए। नकारात्मिक भावनाओं से लड़ने के लिए

शेष पृष्ठ 16 पर

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 3
मार्च – 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नीच सुख अनुराग पागल बनाते हैं

मैं जब 16 – 17 साल का था तब मैंने कॉलेज होस्टल में रहते हुए नौजवान उम्र के एक पागल को देखा, यह भरपूर जवान और हृष्टपुष्ट था। उसने कुछ ऐसी वस्तुएँ जो लोगों ने कूड़ा करकट समझ कर फेंक रखी थी उसने इक्ट्ठी की हुई थी और कुछ चीथड़े उठा रखे थे और उन्हें अपनी प्रिय सम्पत्ति समझ रहा था। वह अपनी किसी वस्तु को हाथ लगाने नहीं देता था। उसके हाथ में मिट्टी का एक कसोरा भी था। मैंने उसका हाथ पकड़ने और कसोरे में क्या है, देखने की कोशिश की तो पता लगा कि उसमें गन्दगी आदि भरी हुई थी। मैंने उसका बाजू पकड़ने और वह गन्दगी भरा कसोरा फिकवाने की कोशिश की तो उसने पूरा जोर लगाकर मुझे पटखा और मेरे तो जैसे पाँव उखाड़ दिए फिर शायद मैंने कालेज की किचन से कुछ रोटी आदि भी उसे खाने के लिए लाकर दी जिससे उसे लेना न चाहा फिर मैंने वह खाना उसके नजदीक घास पर रख दिया और लौट आया।

दिमागी पागल होना किस कदर भयानक! इस घटना ने तब से मेरे हृदय पर एक गहरी छाप छोड़ दी है। दिमागी पागल को अपने शरीर के भले बुरे की, उसके ढकने की, क्या खाना चाहिए व क्या नहीं खाना आदि की कोई सुध नहीं रहती और किसी हमदर्द जन से भले की बात को वह समझने और सच्ची सहायता पाने की हालत में नहीं रहता, तब बेहद तरसनाक अवस्था होती है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपनी अद्वितीय रोशनी में देखा है कि मनुष्य के नीच सुख अनुराग महा भयानक हैं। यह मनुष्य को रूहानी तौर पर अन्धा और पागल बनाए रखते हैं। उन्होंने इस पक्ष में ये भी फरमाया है मनुष्य सब पागल हैं जो पागलखाने में बन्द है वो ज्यादा पागल हैं और जो पागलखाने में बन्द नहीं हैं वह भी सब (कम वा अधिक) रुहानी पागल हैं। उनकी अद्वितीय रोशनी में प्राय: सारे का सारा मनुष्य जगत ही अन्धा और पागल है।

नीच सुख अनुराग मनुष्य का जो उसके लिए सबसे कीमती, हितकर और मुफीद बात हो, उसे न सिर्फ देखने और समझने नहीं देते, बल्कि अपने सुखों के विरोधी होने के कारण उसे गैरज़रूरी और साधारण दिखाते हैं और साधारण और गैरज़रूरी बातों, विषयों और कामों को ही कीमती और ज़रूरी दिखाते हैं। निश्चय ही वह जन रुहानी पागल है जो अपने आत्मा के भले बुरे और उसकी हानि हित की कोई सोझी और फिक्र नहीं रखता और नीच सुखों की मद में पागल होकर खुश – प्रसन्न फिरता रहता है।

दिमागी पागल की अवस्था को देखने और समझने वाले बहुत होते हैं, मगर जहाँ सबके सब पागल हों वहाँ रुहानी पागलपन देखना और दिखाना नामुमकिन सा ही होता है।

मनुष्य का अस्तित्व केवल शरीर नहीं, आत्मा भी है मगर अधिकाँश मनुष्य शारीरिक सुखों के लिए, धन-धरती के लिए, पद, मान, यश और प्रशंसा के लिए, किसी दुनियावी ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल की प्राप्ति के लिए ही जीवन व्यतीत करते हैं। और आत्मा क्या है, वह कितना सत्य और सार और कीमती है, और वह कैसे बनता और बिगड़ता है इस सम्बन्ध में कोई होश और सोझी पाने की जरूरत नहीं समझते और नीच सुखों की तृप्ति की खुमारी ऐसी होश और सोझी की प्राप्ति की ज़रूरत ही देखने नहीं देती जबकि मनुष्य के अस्तित्व में सबसे कीमती और सार और मूल वस्तु आत्मा ही है और इसका हित ही सबसे बड़ा हित है और इसकी हानि सबसे बड़ी हानि है। इन विषयों के सम्बन्ध में उदासीन, बेसुध और गाफिल रहना पागलपन के सिवाए और कुछ नहीं।

जितने प्रकार के सुख अनुराग हैं, वह सबके सब मनुष्य को पागल और अन्धा बनाते हैं। ❖ नशे जहर हैं यह शरीर और आत्मा दोनों की तबाही करते हैं। दुनियावी बड़े से बड़े स्तर के लोग इसके सेवन को ना केवल कोई बुरा नहीं समझते, बल्कि इनमें अपनी शान, वैभव और प्रतिष्ठा देखते हैं। जबकि पशु जगत के छोटे-बड़े एवम हिंसक पशु भी इनमें कोई रुचि नहीं रखते। खाने-पीने में भी अधिकाँश मनुष्य स्वास्थ्य के लिए नहीं जिव्हा सुख के लिए ही सुखदायक पदार्थों का खुशी-खुशी सेवन करते हैं। और इसी सुख के कारण अपनी शारीरिक महा हानि उठाने के भिन्न आत्मा को भी इनका गुलाम बनाकर रोगी और दुर्बल बनाते हैं। इसी सुख की भेंट में लाखों करोड़ों निर्दोष पशु पक्षी भी आए दिन वध किए जाते हैं। ❖ काम वासना के सुख ने मानों सारी मनुष्यता पर अपना मोहनी मंत्र डाल रखा है। ❖ वस्त्रों, पोशाकों आदि के सुख और उनकी दिखावे और टशन के लिए अरबों-खरबों रुपया बरबाद होता है और इस सुख की गुलामी के कारण दिखावा और फैशन मनुष्य को उसी रौ में बह जाने के लिए विवश करता है और घरों में नर्क की उत्पत्ति होती रहती है। ❖ धन सम्पत्ति सुख अनुराग प्राय: सारी दुनिया के सिर पर सवार है और यह जीवन का मुख्य लक्ष्य बना हुआ है। इसकी प्राप्ति बाप-बेटे,भाई-बहनों, पति-पत्नि और नजदीक से नजदीक सम्बन्धों में भीषण दूरियाँ पैदा करके और मारपीट और कत्ल आदि के द्वारा आर्त्तनाद को उत्पन्न करती है। धन को बढ़ाने की होड़ में बड़े-बड़े इन्सान अपनी जान जोखिम में डालते हैं। जेलों की हवा खाते है, विदेशों को भागते हैं और तरह-तरह के अनर्थ करने के लिए विवश होते हैं। सेहत की हानि करते हैं और रोग ग्रस्त होते हैं। धन सुख का स्रोत नहीं है। उच्च भावों और त्याग में सच्चा सुख है, इसे देखना भी सुख अनुराग असम्भव कर देते हैं। ❖ यही हाल मान-सन्मान, बड़ाई-प्रशंसा आदि अहं सुख अनुरागों का है। उनके पैदा होने वाला अन्धकार और पागलपन देखना और उससे बचना अगर नामुकिन नहीं तो बेहद कठिन जरूर है। इस सुख अनुराग के प्राय: सभी इन्सान (बहुत महान और सात्विक जनों को छोड़कर) नेक से नेक ओर शरीफ से शरीफ और योग्य से योग्य जन भी शिकार पाए जाते हैं। मिथ्याचार और पापाचार छोड़कर भगवान देवात्मा के बने हुए सेवक-सेविका भी इसके बुरी तरह शिकार रहते हैं। और इससे उत्पन्न अन्धकार और पागलपन के चक्रव्यूह को देखने और समझने तक से विवश रहते हैं।

पागल वह है जो अपने आत्मिक भले-बुरे का कोई ख्याल और फिक्र नहीं रखता। पागल वो है जो कोई बकायदा प्रतिदिन अपने आत्मिक भले के लिए साधन और पाठ-विचार करने की ना जरूरत महसूस करता है बल्कि उन्हीं नीच सुखों में वह सुअर की तरह खुश प्रसन्न रहता है। पागल वह है जो जिस्मानी खुराक की तरह किसी उच्च संगत की जरूरत महसूस नहीं करता और जो छोटे-छोटे दुनियावी काम धन्धों को जरूरी और कीमती समझता है और

सत्संग के लिए समय नहीं निकालता। पागल वह है जो दुनिया के सामान और सम्बन्धियों की आत्मा को सुन्न कर देने वाली जहरीली और कोल - गैस की तरह बेहोश कर देने वाले वातावरण में खुशी - खुशी विचरता है और वहाँ भाग - भाग कर जाने और रहने में तृप्ति देखता है और किसी उच्च प्रभाव दायक नई सोझी और होश पैदा करने वाले वातावरण की कोई तमीज और कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता। पागल वो है जो अपने से महान जनों को महान नहीं देखता और अपने आप को ही सब कुछ जानने वाला और ठीक ठाक समझता है। पागल वो है जो अपने उपकारी को उपकारी नहीं देखता, बल्कि अपनी सुख लालसा के विरुद्ध पाकर उसे अपना शत्रु देखता और समझता है। उसके लिए सम्मान नहीं रखता और उसके लिए कुछ करना नहीं चाहता। उसका अपमान करता है और दुख और हानि पहुँचाने से भी नही डरता। पागल वह है जो केवल अपने और अपने बच्चों के लिए ही जीता है और जो हर रोज और हमेशा दूसरों के कुछ काम आने की कोई ज़रूरत और फिक्र नहीं करता।

मनुष्य पाँव से लेकर चोटी तक कमियों से भरा हुआ है और गल्तियों का पुतला है मगर अपने आप को ऐसा ना देखकर स्वयं को पूर्ण निर्दोष देखकर और महसूस करके खुश रहता है। पागल वो है जो अपनी कमियाँ और नीचताएँ नहीं देख पाता और उससे दुखी और भयभीत नहीं होता और अपनी कमियों से बचने का कोई फिक्र और प्रयास नहीं करता। पागल वो है जो अपने पागलपन को समझने और उसे अनुभव करने का प्रयास नहीं करता और इस भयानक दुर्दशा से निकलने और उससे बचने का भरसक फिक्र और यत्न नहीं करता।

उपरोक्त सब पागलपन नीच सुख अनुरागों के हमारे अन्दर बढ़ने और हमारी हस्ती पर हावी होने और हमें अपना दास और बन्धुआ बना लेने के कारण उत्पन्न होते हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के महा अनुपम देव प्रभाव (उनकी अद्वितीय ज्योति और शक्ति) ऐसा अमृत हैं कि जो रूहानी आक्सीजन का काम करते हैं। और अपने हित और अहित से बेसुधों को जगाने और होश में लाने के लिए जादू का सा काम करते हैं।

महा सौभाग्यवान हैं वह जन जो देवात्मा के महा अनुपम देव प्रभावों तक रसाई पाने की बेहद जरूरत को बहुत गहराई से अनुभव करते है और देवात्मा अद्वितीय सतगुरू के देव प्रभावों तक रसाई पाने के ठोस नियमों को समझते और उपलब्ध करते हैं और उन नियमों को पूरा करने में सदैव सरगर्म रहते हैं। (बलदेव सिंह)

देवात्मा फरमाते हैं :-

किसी जन में अहं अनुराग जितना बड़ा हुआ होता है, उतना ही वह अपनी मर्ज़ी पूरी करना चाहता है। ऐसा जन अपनी किसी नीच रुचि पर चोट लगने से झुंझला उठता है और अपने हितकर्ताओं से फट जाता है। जिस प्रकार एक बच्चा दिन रात अपनी माता से सेवा पाकर भी तत्काल उससे फट जाता है, जब जब भी वह कोई काम बच्चे की मर्ज़ी के ख़िलाफ करना चाहती है, यथा बच्चा अपना मुंह धुलाना नहीं चाहता और माता मुंह को धोना चाहती है, तब माता की इस भली कोशिश से भी बच्चा नाराज़ हो जाता है - तुम्हारे भीतर इस शक्ति का वर्तमान होना कि जब तुम्हारा कोई हितकारी तुम्हारी रुचि के खिलाफ कुछ कहे, तो उस हितकारी को हितकारी के रूप में देख सको।

देवाश्रम लहौर में पति पत्नी व्रत का साधन

(भगवान देवात्मा के एक उपदेश का सार)

फाल्गुण शुदि पूर्णिमा सम्वत् 1964 वि. अर्थात् 17 मार्च 1908 ई को होली के दिन देवाश्रम लाहौर में पति पत्नी यज्ञ सम्बन्धी व्रत का साधन हुआ। व्रत साधन से पहले जब सेवक गण परम पूजनीय भगवान देवात्मा के श्री चरणों में उनका अर्चन करने और उनसे पवित्र आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए पहुंचे, तब जीवन दाता भगवान देवात्मा ने- जिनका ज्योतिर्मय मुख पहले से ही ऐसे उच्च भावों के उद्वेग से चमक रहा था- अर्चनादि के अनन्तर सब सेवक जनों को अपने सम्मुख बैठने की आज्ञा दी, और प्राय: पौने घण्टे तक अत्यन्त हितकर उपदेश प्रदान किया जिसका अत्यन्त संक्षिप्त सार अपने शब्दों में एक कर्मचारी ने नीचे दिया है :-

देव धर्म की शिक्षा विज्ञान-मूलक सत्य शिक्षा है। ज्यों ज्यों अधिकारी जन उसकी विशेषता और उसके महत्व को उपलब्ध करेंगे, त्यों त्यों वह उस पर मोहित और बलिहार होंगे। इस धर्म की विज्ञान-मूलक शिक्षा के अनुसार मनुष्य इस नेचर का एक अंश है और वह प्रति मुहूर्त और प्रत्येक स्थान में इस नेचर के नाना अस्तित्वों से घिरा हुआ है। वह इस नेचर के प्रत्येक विभाग से बहुत गहरे तौर से जुड़ा हुआ है।

इन विभागों के सम्बन्ध में वह नाना प्रकार की गतियां ग्रहण करके या तो धीरे-धीरे विनष्ट हो जाता है, या विकास लाभ करता है। इस मूल सत्य को भली भांत उपलब्ध करने से ही इसका प्रकृत कल्याण है।

पति पत्नी के सम्बन्ध की हक़ीक़त क्या है? इस विशेष सम्बन्ध में बन्धने से पहले, उनमें से एक साधारण कन्या वा स्त्री होती है, और दूसरा एक साधारण बालक वा पुरुष। परन्तु एक विशेष अनुष्ठान के द्वारा पति और पत्नी बनकर भी वह साधारणत: किस सूत्र को लेकर जुड़ते हैं? मुख्यत: काम वासना की तृप्ति के लिए। वह एक दूसरे के साथ प्रधानत: इसी वासना की तृप्ति के लिए विवाह करते हैं। कुछ थोड़ी सी और बातों के भिन्न उनकी अधिकतर बातचीत और एक वा दूसरी क्रिया इसी वासना की प्रेरणा से होती है। उन्हें कोई पता नहीं होता, कि वह अपनी ऐसी गति से एक दूसरे को क्या बनाते और आप क्या बनते हैं। धर्म अर्थात् आत्मा की उच्च वा नीच गति के विषय को लेकर उनकी आपस में प्राय: कोई बातचीत नहीं होती। अपने किसी दोष वा अपराध वा पाप से उद्धार लाभ करने के विषय में उनकी कोई बातचीत नहीं होती। अपने परिवार और अपने परस्पर के सम्बन्धों को धर्मगत सम्बन्ध बनाने के विषय को लेकर वह कोई परामर्श नहीं करते। फिर पति और पत्नी का ऐसा सम्बन्ध कहां से पवित्र हो, जबकि साधारणत: पुरुष स्त्रियों की ओर और स्त्रियां पुरुषों की ओर केवल एक ही वासना को लेकर देखते और चिन्ता करते हों, और इसी वासना को खुल्लम- खुल्ला प्रकाश करने के लिए नाना प्रकार की परस्पर अश्लील बातचीत और गन्दी बकवास करते हों। सैकड़ों पढ़े लिखे और तालीमयाफ़ता आपस में बैठकर जब तक प्रति दिन गन्दी हंसी मख़ौल न कर लें, तब तक उन्हें चैन नहीं आता। हमारे देश में होली का त्योहार ही इसी जोश को लेकर मनाया जाता है, कि जिसमें एक-एक स्त्री को चाहे वह किसी की मां वा बहू वा बेटी हो, रास्ते में गुज़रना तक मुश्किल हो जाता है, और बहुत से पुरुष खूब दिल खोलकर अश्लील गीत गाते और "कबीर" आदि बोलते हैं। जैसे एक-एक निर्दयी मनुष्य एक-एक पशु को अपनी स्वाद वासना के लिए वध करने वा कराने में उसके प्रति कोई दर्द वा दया नहीं अनुभव करता, और दया और न्याय की कोई

अपील उसके दिल को नहीं छूती, उसी प्रकार कामी पुरूष स्त्री को देखने के साथ ही विवश नीच चिन्ता और अपनी नीच वासना की अभिलाषा से भरकर अन्धा हो जाता है। उसकी निगाह किसी स्त्री के किसी सद्गुण की ओर नहीं जाती। उसको चिन्ता उसके किसी अच्छे भाव को लेकर नहीं होती। किन्तु केवल यही एक चिन्ता उसके दिल और दिमाग़ पर अधिकार कर लेती है। ओह! कितनी शोचनीय अवस्था!! काम वासना बेशक कोई स्वयं बुरी वासना नहीं। उसके बिना पति पत्नी विषयक प्रणय और सन्तान् की उत्पति और मनुष्य जाति की रक्षा ही नहीं हो सकती। परन्तु इस वासना का अनुचित अधिकार होने से एक-एक जवान पेशतर इसके, कि वह जवान हो, अपनी शारीरिक और मान्सिक शक्तियों को नष्ट कर लेता है और जिस्म और दिमाग़ और दिल के विचार से बिल्कुल खोखला और रद्दी हो जाता है। और इसीलिए हमारे देश में बहुधा क्या स्त्रियां और क्या पुरुष जवानी की प्रकृत अवस्था को बहुत थोड़े काल तक भोगते हैं। हमारे देश के ऐसे बालकों और कन्याओं, पुरुषों और स्त्रियों की यह अवस्था किस क़दर शोचनीय! क्या ऐसी ही रद्दी नसलों से हमारा देश उभर सकता है, और उसमें बल और वीर्य आ सकता है? कदापि नहीं। सच्चे ब्रह्मचर्य की बहुत बड़ी ज़रूरत है। अविवाहितों के भिन्न विवाहितों को भी ज़रूरत है। काम वासना के भयानक अधिकार से हृदयों को पवित्र करने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। बिना इस अधिकार के घटने के नर और नारियों, पति और पत्नियों का सम्बन्ध पवित्र नहीं हो सकता, और पुरुषों में स्त्री जाति के प्रति विशुद्ध सम्मान् का भाव पैदा नहीं हो सकता, और पुरुषों और स्त्रियों का परस्पर सम्बन्ध भी उच्च नहीं हो सकता।

किसी विचार शील ने कहा है, कि किसी देश की सभ्यता का इस बात से अन्दाज़ा हो सकता है, कि उसके पुरुषों में स्त्रियों के लिए कहां तक सम्मान् का भाव पाया जाता है, और उनके परस्पर के सम्बन्ध कहां तक पवित्र और हितकर बातों को लेकर स्थापन हुए हैं। ऐसा हो, कि सत्य धर्म विषयक जीवन के प्रचार से यह सब दुरावस्था दूर हो, और पति पत्नियों और नर नारियों के परस्पर के सम्बन्ध पवित्र और उच्च हों।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित भजन

सच्चे पति और पत्नी वह जो, उच्च लक्ष्य रख मेल बढावें,
सच्चे मित्र परस्पर बनकर, इक दूजे को उच्च बनावें।
इक दूजे से सच्चे रहकर, उच्च प्रेम अपना दिखलावें,
इक दूजे की सेवा करके, इक दूजे को सुख पहुँचावें,
निज कर्तव्य का पालन करके, नीच स्वार्थ की दिग नहीं जावें,
पति पत्नि यज्ञ साधन करके, गृहस्थ की महिमा को दर्शावें।

महोत्सव में आकर

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी के अद्वितीय रूप को मुझ तुच्छ का बारम्बार प्रणाम।

सम्मानीय मन्त्री जी व सम्पादक महोदय आप का बहुत बहुत शुभ हो सत्य देव की जय। भगवन के महोत्सव पर जितनी भी सभाऐं हुई बहुत हितकर थी। सभाओं में बैठकर मन की छवि नज़र आती है और अपनी अवस्था (हृदय की) पर तरस आता है कि हमें क्या करना चाहिए और हम क्या कर रहे हैं। हर एक सभा का प्रभाव कुछ अलग था। लैक्चर तो कमाल के थे। श्रीमति शशी जैन जी का लैक्चर बहुत कमाल का था जो हमें मिथ्या से अवगत कराता है। वास्तव में भगवान देवात्मा जी की शिक्षा ही इतनी यूनीक है कि मन बल्लियों उछलता है और प्रार्थनाशील रहती हूँ कि ये शिक्षा पूरे संसार में जल्दी से जल्दी फैल जाये जिस तरह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। भ्रष्टाचार हमारा नैतिक पतन करता है। मगर भगवान की शिक्षा नैतिक उत्थान करती है। मैं शशी दीदी की शुक्रगुजार हूँ उनके लैक्चर से काफी ज्ञान बढ़ा। सम्मानीय श्रीमान खेड़ा जी का लेक्चर बिल्कुल स्पष्ट सत्य ज्ञानदायक था जो उन्होंने हमें उदाहरण देकर सत्य का ज्ञान दिया कि जीवनी शक्ति किस कदर शरीर निर्माण करती है और किस प्रकार वनस्पति जगत में जीवनी शक्ति काम करती है। मैं उनका हृदय के गहरे भावों से धन्यवाद करती हूँ। सभाएं भी दिल को छूने वाली थी। श्रीमान जी बलबहादुर सिंह जी की सभा व अपने भावों का प्रकाश करने का हृदय स्पर्षीय दृश्य था। श्रीमान (सम्मानीय) भल्ला जी की महा सभा बहुत देव प्रभावों से युक्त थी उनका भी हर प्रकार से शुभ हो, धन्यवाद। देवाश्रम की सुन्दरता धर्मसम्बन्धियों का प्यार खाने पीने व रहने की व्यवस्था बहुत सुन्दर थी। कमी लगी तो उस समय मुझे अपने में ही लग रही थी क्योंकि मैंने कोई सेवा नहीं की, बस सेवा पाई ही थी।

सभी धर्मसम्बन्धियों का धन्यवाद जिन जिन से सेवा पाई है। श्रीमान जगजीत सिंह जी बुखार होते हुए भी काम करते रहे उनका शुभ हो। सुखदेव जी का बंहुत-बहुत धन्यवाद जिन्होंने इतनी दूर रहते हुए भी देवाश्रम के लिए बहुत सुन्दर स्थान दिया है। और वह वहाँ भी गुरू सेवा में रत रहते हैं। सम्मानीय श्रीमान मंत्री जी का भी धन्यवाद उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे। मैंने अपने भाव बहुत देर से लिखे हैं क्षमाप्रार्थी हूँ इसके लिए। सोच तो बहुत रहती थी मगर बल नहीं मिल रहा था। सो सबका धन्यवाद। मेरी शुभकामनाएं सबके लिए। पूजा जी के भजन गाने का अन्दाज बहुत अच्छा था मन प्रसन्न हुआ। सम्मानीय मन्त्री जी का स्वास्थ्य अच्छा हो। जब मैं मन्दिरों में चढ़ावा चढ़ते देखती हूँ रूपया पैसा सोना तो यही मन में आता है कि इन दान दाताओं को सही रास्ता दिखाया जाये। आज कल झुग्गीयों में रहने वालों का हाल देखो कितना बुरा है शिक्षा का अभाव है, लोग गन्दगी में जीते हैं। एक एक जन शराब पीकर कितने बच्चे पैदा कर लेता है जिस को पालना मुश्किल हो जाता है, किसी के पैर में चप्पल नहीं, तन पर कपड़े नहीं मगर नशों में अन्धे होने की वजह से लोगों को अपनी सही कीमत का ज्ञान नहीं । ये मन्दिरों का पैसा शिक्षा विभाग में जाना चाहिये ताकि गरीब बच्चों को शिक्षा मिल सके। गरीबों के लिए अस्पतालों का इन्तजाम होना चाहिए। सरकारी अस्पतालों का अधिक मात्रा में निर्माण होना चाहिए। शिक्षा वहीन बच्चों के लिए शिक्षा के बारे में घर-घर बताना चाहिए ताकि उनके माता पिता को शिक्षा के लाभों का पता चल सके और हानि का बोध हो सके। गरीब परिवार 12 से 14 साल की अबोधी बालिकाओं की शादी कर देते हैं, बच्ची शराबी के पल्ले

बांध दी जाती है और ताउम्र दुखी रहती है। शिक्षा संस्थानों में नैतिक मूल्यों का विकास होना चाहिये। किताबों का ज्ञान सिर्फ पैसा कमाने के काम आता है। आज कल पढ़ लिखकर भी लोग, ऐश की जिन्दगी जीने के लिए पाप करते हैं। एक से दो पीरियड आत्मिक विकास के लिए होने चाहिए। परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी का विज्ञान मूलक सत्य सबसे उत्तम व सर्वोपरी है जो हमारा मिथ्या से बचाकर आध्यात्मिक विकास करता है। देवात्मा की शिक्षा पूरे विश्व में फैलने के लिए है। देवात्मा द्वारा मनाये 16 सम्बन्धो के त्योहार हितकर व सर्वश्रेष्ठ हैं। काश! हम देवात्मा के मिशन को समझ कर इसमें योगदान दें और देवात्मा की शिक्षा को आगे से आगे बढाने का प्रयास करें। भगवन हमें इतना बल दें कि हम मनुष्यात्मा अपने को समझ सकें और उनकी देवज्योति और देवशक्ति पाकर अपने आत्मा के स्तर को विकसित कर सकें।

आज से 5 वर्ष पहले हमारी भी हालत आत्मा के हिसाब से दयनीय थी। कोई होश नहीं थी न तन की न मन की। परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी के देव प्रभाव हम दुर्बल मनुष्यात्माओं तक सम्मान के योग्य हमारे उपकारी श्रीमान जवाहर लाल जी के द्वारा पहुँचे तो हमारा भला हुआ हम उनको तहदिल से ध न्यवाद देते हैं, जिन्होंने हमारे ऊपर यह उपकार करके हमारे जीवन का रास्ता खोल दिया। हम दुर्भाग्यवान से सौभाग्यवान बन गये। घर से नशों का बहिष्कार हो गया। लड़ाई झगड़ा खत्म हो गया, अब हम रोज प्रार्थना करते हैं जैसे हमारे शुभ के द्वारा खुले हैं ऐसे ही अनेक आत्माएं इस दर पर आकर अपने को धन्य धन्य करें। आप सब का धन्यवाद।

अहो भाग्य सतगुरू तुम्हें मैने पाया ।
तेरी फैजों का गीत जाए ने गाया ।।

लुधियाना में हम सम्मानीय श्रीमान भल्ला जी से सभायें सुनकर अपना भला करते हैं। उनका बहुत - 2 शुभ हो।

- सुदेश खुराना

असाधारण ईमानदारी

सन् 1965 में पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान पर हमला किया था। उस समय सीमा के जो गांव और नगर थे उनको छोड़कर लोग सुरक्षित स्थानों पर चले गए थे। फाजिल्का के एक वकील साहब अपना घर बार अपने एक नौकर के हवाले छोड़ कर चले आए, क्योंकि शहर को बहुत खतरा था। उनके घर में बहुत सारा सामान था और एक गाय थी जो आठ दस सेर हर रोज़ दूध देती थी। नौकर गाय का दूध निकालता और उसका घी इकट्ठा करता रहता। आसपास जो कुछ भी लोग रहते थे, वह देखते थे कि इस दूध में से अपने लिए एक घूंट भी नहीं लेता था। कुछ समय बाद घर के मालिक रात को अपने घर फाजिल्का पहुंचे। उन्होंने देखा कि उनका नौकर गिलास में बाजर से कुछ लिए हुए आ रहा रहा है। गिलास में कुछ दूध था जो वह अपने लिए बाजार से खरीद कर लाया था। वकील साहब ने नौकर से कहा कि जब घर में गाय का दूध है आठ दस सेर हर रोज़ होता है तो तुम बाजार से क्यों लाए? "वह दूध आपकी गाय का है।" नौकर ने उत्तर दिया? मैं अमानत में ख़्यानत नहीं कर सकता। मालिक ने देखा कि उसके घर की सब चीजें सुरक्षित हैं। ऐसे असाधारण ईमानदार नौकर का शुभ हो।

चाणक्य की ईमानदारी

दूसरे देश में आया शिष्टमण्डल महामात्य चाणक्य से मिलने पहुँचां उसे आया देख चाणक्य ने कक्ष में रखा दीपक बुझा कर दूसरा दीपक जला दिया। शिष्टमंडल के अगुवा ने उनके ऐसा करने का कारण पूछा तो चाणक्य ने उत्तर दिया - "जब आप लोगों ने प्रवेश किया तब मैं व्यक्तिगत कार्यों में संलिप्त था और जो दीपक जल रहा था, वह मेरे निजी धन से आए गए तेल से जल रहा था। अब जल रहा दीपक राजकोष के धन से चल रहा है।" शिष्टमंडल चाणक्य की ईमानदारी से अधिभूत हो गया।

नारकीय घर कैसे स्वर्ग बन गया

देव धर्म की सभा में आने से पहले हमारा घर नर्क बना हुआ था। दादी माता-पिता, भाई बहन हम सब अपनी-अपनी इच्छाओं के कारण लड़ते झगड़ते रहते थे। हम सब अपने आपको बहुत अच्छा समझते थे। हम कहते थे कि माता-पिता ने शादी करवाई अपनी काम वासना की पूर्ति के लिए और बच्चे पैदा किए। उनको पालना इनका फर्ज़ था। मजे लिए हैं तो अब भुगतो। मां बाप की जितनी बेइज्ज़ती की है, उसकी कोई सीमा नहीं। मां को अपने हाथों से मैंने पीटा है। पिता के सामने बकवास की है और उनको बदनाम करने की कोशिश की है। इधर की चुगली उधर बस यही एक काम किया है। 95 वर्ष की बूढ़ी दादी से खूब काम करवाया है। बुरा भला कहा कभी कभार चोटी से भी पकड़ कर खूब दुख पहुंचाया है। हम सब ही आपस में लड़ते रहते थे। शायद ही कोई दिन होगा जो शान्ति से गुजरता हो। हमारे घर की दीवार तक आने से भी पड़ोसी डरते थे। हम समाज की परवाह नहीं करते थे, बड़ी बेशर्मी से लड़ते थे। पूरे मोहल्ले को पता था कि हमारा व्यवहार एक दूसरे को हानि पहुंचाने का ही है। मकान बनाते समय पिता जी ने पहले ही बीच में दीवार डाल दी थी, ताकि दोनों भाईयों की शादियां हों तो दोनों भाई अलग अलग रहें। कभी कभी तो यहां तक सोचते थे कि आत्म हत्या कर लें या घर से भाग जाएं। कभी कोई दरवाजे से सिर फोड़ता, कोई बर्तन तोड़ता, कोई दूसरों की स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता। हम में से जो लड़ाई झगड़ा करके बाहर निकलते, तो पड़ोसी भी घरों में घुस जाते कि हम गुस्सा न करें। मुझ में अपना अहंकार था और बाकी लोगों में अपने अपने अहंकार थे। घर में जब देखो, क्रान्ति, विद्रोह, लड़ाई झगड़ा, बहुत कम शान्ति रहती थी। छोटी-छोटी बात को लेकर झगड़ा शुरु हो जाता।

अगर देव धर्म न मिलता, तो न जाने कौन से नर्क में पड़े रहते। क्या पता क्या बुरा हाल होता। हम सोचते हैं कि देव प्रभावों से अब यह घर स्वर्ग बन रहा है। यह वही घर है, जहां दिन रात जीना हराम था। क्या यह वही घर है जहां एक दूसरे का अपमान होता था, बड़ों की कोई कदर नहीं थी। क्या यह वही घर है जहां एक दूसरे का अशुभ सोचा जाता था। किसी रिश्तेदारी का लिहाज न था, गुरु ने नर्क से स्वर्ग बना दिया, हमारी जिन्दगियों में खुशियां भर दीं, जो मौत की ओर जा रहे थे, उनमें नया जीवन संचार कर दिया, हमारा भविष्य संवार दिया। वाह! देवगुरु जी कैसा स्वर्ग लाते हैं, नर्क मिटाते हैं। हमारे जीवनों में नया उत्साह भर दिया। जीवन में सुख शान्ति लाकर, हमारे व्यवहार बदल दिए। श्रीमान जी, यदि आपकी सभाएं न मिलतीं तो हम शायद ही लम्बे समय तक रह पाते। इस घर में तो आत्म हत्या के विचार चलते थे। मिथ्या धर्म कर्म, मन्त्र जाप, पूजा पाठ खूब चलते थे, परन्तु फिर भी शान्ति नहीं थी, घर नर्क बना हुआ था, परन्तु इस नर्क को गुरु के प्रभावों ने स्वर्ग में बदल दिया। श्रीमान जी! मेहरबानी करके यह प्रभाव हम तक पहुंचाते रहना, ताकि फिर हम नर्क में न पड़ जाएं। हमारी उंगली अपने हाथ में पकड़े रखना।

हम चाहते थे कि आपको अपने घर पर बुलाएं और आपसे उच्च प्रभाव ग्रहण करें। कभी हमारे घर में कोई महा पुरूष, साधु सन्त नहीं आया। आपके आने से हमारे घर का वातावरण ही बदल जाएगा। कभी कभी डरता हूँ कि मैं कहीं ऐसे प्रभावों से वंचित न हो जाऊं, क्योंकि मैं बहुत चंचल हूँ, न जाने कब नीच प्रभावों में चला जाऊं। क्योंकि मेरी नजरें, मेरे हावभाव मेरा चाल चलन, मेरी सोच अभी भी गन्दी है। मैं खुद तो नीच हूँ। परन्तु दूसरों को भी नीच बना देता हूँ। मेरे भीतर का अहंकार नहीं मर रहा। कोई ज़रा सी बात मेरी शान के खिलाफ बोल दे तो लगता है कि कोई छुरा मार गया। मान सम्मान वा प्रशंसा का भूखा हूँ। अभी भी किसी की बात नहीं मानता, अपनी ही

चलाता हूँ मुझे बचाओ, मेरा नीच जीवन बदलें, मुझमें उच्च प्रभाव आएं मेरा घर स्वर्ग बना है, आप हमारी मदद करें। मेरी बहन का जीवन भी उच्च बनाओ। मुझमें अभी बचपना है। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि मेरा लक्ष्य क्या है। अभी अपने आपको आपके हवाले करना चाहता हूँ। मेरे भीतर ईर्ष्या द्वेष भरा पड़ा है, हमेशा दूसरों की कमियों को देखता हूँ। दूसरों से जलता हूँ, चाहता हूँ, कि दूसरे मुझे अच्छा व्यवहार दें, मुझे अच्छा समझें, मगर खुद गुस्से से भरा रहता हूँ। दूसरों की सेवा करना लाभ की चीज़ नहीं लगती। मुझे मेरी कमियां दिखाओ। नीच असरों में रहकर कहीं देव रत्न न बन जाऊँ।

देवात्मा ने इस नारकीय घर को स्वर्ग बनाया है, जितना भी धन्यवाद दूँ थोड़ा है। सुभाष सेतिया जी का धन्यवादी हूँ, जो मुझे इस संगत में लाए। पहले मिथ्या में था इसलिए दोबारा नहीं आया। मगर सुभाष जी ज़ोर लगाते रहे पुस्तकें पढ़ने को देते रहे, आखिर आप से मिला ही दिया। देव संगत ने मेरा जीवन ही बदल दिया। हमारे पर अपना हाथ रखो। मैं बहुत ही गन्दा वजूद हूँ। मुझे ऐसे प्रभावों की आवश्यकता है। मेरी बहन पर भी यह कृपा हो। मैं आपका बहुत धन्यवादी हूँ।

(एक सत्संगी)

ऐसा भाईचारा और कहां

फतेहगढ़ साहिब के महदिया गांव में आज भी मौजूद है मुगल काल में बनी 350 साल पुरानी मस्जिद एक परिसर में गुरुद्वारा - मस्जिद ग्रंथी करते हैं मस्जिद की सफाई, नमाज के बाद मुस्लिम गुरुद्वारे में नवाते है शीश। भाईचारे की ऐसी मिसाल कि मस्जिद की देखभाल के लिए गांव वाले देते हैं दसवंद, सिखों ने 1710 में वजीर खान को हरा जमाया था कब्जा, पर मस्जिद को नहीं पहुंचा नुकसान। फतेहगढ़ साहिब की पवित्र धरती पर भाईचारे और धार्मिक सौहार्द की मिसाल महदियां गांव में देखने को मिलती है। यहां एक ही परिसर में मस्तगढ़ साहिब गुरुद्वारा भी है सफेद चितयां मस्जिद भी। मस्जिद की साफ सफाई से लेकर मुरम्मत तक हर छोटा - बड़ा काम गुरुद्वारे के ग्रंथी जीत सिंह (45) ही संभालते हैं।

यहां जो मुस्लिम भाई नमाज अदा करने आते हैं वे नमाज के बाद गुरुद्वारे में भी नतमस्तक होते हैं। जो सिख भाई गुरुद्वारे में माथा टेकने आते हैं वह मस्जिद को भी देखने पहुंचते हैं।

100 साल पहले मस्जिद के अंदर ही होता था श्री गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश

ग्रंथी ने बताया कि मस्जिद करीब 350 साल पुरानी है। सिखों के धार्मिक नेता अर्जुन सिंह सोढ़ी ने मस्जिद के भीतर श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश कर, इसे खुला छोड़ दिया। इसके बाद मस्जिद के अंदर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होने लगा। इसके बाद वहीं परिसर में कमरा बना दिया और वहां गुरुग्रंथ साहिब का प्रकाश होने लगा। 2013 में संगत ने गुरुद्वारा बनाने का फैसला किया। 2018 से नये बने गुरुद्वारा साहिब में गुरुग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है।

मस्जिद के खर्च के लिए 52 गांवों के लोग निकालते हैं

मस्जिद की सफाई से लेकर मरम्मत तक का काम गुरूद्वारे के ग्रंथी खुद देखते हैं। मस्जिद का हर साल रंग करवाया जाता है। आसपास के 52 गांव की जमीन बाबा अर्जुन सिंह जी ने महाराजा पटियाला से वापस दिलवाई थी। इन गांव के लोग मस्जिद की देखभाल के लिए दसवंद निकालते हैं।

6 साल पहले तक बदहाल थी मस्जिद

मस्तगढ़ साहिब चितियां गुरुद्वारे के ग्रंथी जीन सिंह ने बताया कि मैं छह साल पाहले जब मैं भगडाना गांव से यहां ग्रंथी बनकर आया तो मस्जिद बदहाल थी। मैंने रोज मस्जिद के भीतर की सफाई करवाई। अब भी मैं ही देखभाल करता हूं। मेरा मानना है कि आदमी को हिंदू, मुस्लिम, सिख और इसाई होने से पहले उसे इंसान होना चाहिए।

देव समाज का अनोखापन कहां है?

अर्मत वर्षा - पी.वी कनल

देव समाज ही एक ऐसी धर्म समाज है, कि जिस को प्रचलित मतों के मुख्य विश्वासों पर किसी प्रकार का विश्वास नहीं। देव समाज खुदा या परमात्मा को नहीं मानती, देव समाज अल्ला या ईश्वर को नहीं मानती, देव समाज ब्रह्म व परमात्मा को नहीं मानती, देव समाज दुनियां के कुल माबूदों को मिथ्या माबूद मानती है। देवसमाज किसी इलहामी पुस्तक के नहीं मानती। जब कोई खुदा वा परमात्मा है ही नहीं तो इलहाम काहे का। देव समाज सब कहलाने वाली पुस्तकों व ग्रन्थों को मनुष्य रचित मानती है। देव समाज न नरक को मानती है न स्वर्ग को मानती है, न पुनर्जन्म को मानती है, न आवा - गमन को मानती है, देव समाज यह नहीं मानती, कि मनुष्यात्मा अनादि है, देव समाज यह नहीं मानती, कि मनुष्यात्मा आरम्भ से ही अमर है, देव समाज किसी नबी वा हादी की सिफारिश को नहीं मानती, देव समाज सब प्रचलित मतों के मुक्ति के विश्वासों को मिथ्या मानती है, इसी प्रकार मतों के माबूदों पुस्तकों, विश्वासों और उन की बुनियादी शिक्षाओं को एक बहुत बड़ा अधर्म मानती है। इस अंग में भी देव समाज अनोखी समाज है। अब यहां पर यह प्रश्न पैदा होता है, कि देव समाज प्रचलित मतों के दिए हुए डरों और लालचों को छोड़कर किस बित्ते पर अपने आप को धर्म समाज मानती है, अपने आपको सत्य धर्म की शिक्षक मानती है, और अपना अनोखा वा आश्चर्य कार्य करती है। इतना तो सच है, कि देव समाज ही दुनिया में एक ऐसी समाज है कि जिस में प्रवेश करने की शर्त निराली है। देव समाज न केवल मिथ्या विश्वासों से अधिकारी आत्माओं को मुक्त करके उन्हें अपनी गोद में लेती है, किन्तु उन से वह आठ पाप छुड़ाती है, कि जिन के करने से दुनिया जहन्नुम का नमूना बनी हुई है। देव समाज उनको ही अपनी शरण में लेती है, कि जो मांस, अण्डे और उनकी बनी चीज़ें न खाते हों, जो सब प्रकार के नशों से आजाद हों, जो चोरी, जुआ और बददयानतीसे मुक्त हों, जो अमानत से ख़यानत न करते हों, जो किसी का कर्जा न दबाते हों, जो व्यभिचारी न हों, जो विवाह सूत्र में बन्धे हुए अपने साथी के जीते जी दूसरा विवाह न करते हों, जो किसी जीवधारी को बिना किसी उचित कारण के वध न करते हों, आदि - आदि।

हमने सारे ईश्वर विश्वासियों को कई बार चेलैंज दिया है, कि तुम सब मिलकर और अपने परमात्माओं को मिलाकर इस प्रकार की पवित्र धर्म समाज पैदा करो। ऐसी पवित्र सोसाईटी पैदा करने के लिए कुल प्रचलित मत असमर्थ हैं। यहां तक कि एक एक खुदा परस्त सोसाईटी का लीडर दुनियां के सामने लेख के द्वारा यह प्रकट करता है, कि उनकी सोसाईटी ने 95 प्रतिशत जन नाना प्रकार के स्थूल पापों में फंसे हुए हैं। क्या ऐसी सोसाईटी धार्मिक सोसाईटी कही जा सकती है? धर्मजीवन को मुख्य रखकर दुनिया में कोई समाज या मजहब नहीं है। इसलिए दुनिया के सारे प्रचलित मत धर्म जीवन के विचार से पूर्णत: अधर्म जीवन रखने वाले हैं। देव समाज ही एक ऐसी समाज है, कि जिसके भीतर ऐसी सैकडों परिशोध की घटनायें पैदा हो चुकी हैं कि जिनके कारण बोधी जनों ने अपने पापों के भिन्न पैसों के सम्बन्ध में किये हुए पापों का गैर मामूली तौर से परिशोध किया है। उन्होंने हजारों रुपये उनके असल मालिकों को वापिस किये हैं। इसके भिन्न देव समाज ही एक ऐसी सोसाईटी है, जिसमें स्वार्थ पर जबरदस्त कुल्हाड़ा चलाया जाता है। देव समाज में प्रवेश किये हुए ही एक एक अधिकारी जन को अपनी स्वार्थी अवस्था बुरी लगने लगती है।

ऐसे शुभकर अवसर उत्पन्न होते रहे हैं, कि जिनमें कई अधिकारी आत्मा भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से प्रभावित होकर फूट पड़ते हैं, और रोते हुए पुकार उठते हैं कि हाय! उन्होंने अपना जीवन स्वार्थ में रह कर नष्ट कर लिया।

देव समाज जो यह अनोखा कार्य कर रही है, वह क्यों? वह इसलिए कि एक देव समाज ने आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान् देवात्मा से जन्म पाया है, और उनसे ही पालना लाभ की है। देव आत्मा अपने अनोखे देव प्रभावों से कुल मिथ्याओं और पापों को नष्ट करने की सामर्थ्य रखते हैं। और उन्हीं देव प्रभावों के द्वारा ही अधिकारी आत्माओं के न केवल नैतिक जीवन को ऊंचा बनाते हैं, किन्तु परोपकार का जीवन भी प्रस्फुटित कर देते हैं। आत्मिक नियमों को पूरा करने से यहां करामतें उत्पन्न होती हैं। इन आत्मिक नियमों का देवात्मा ने ही पूर्ण ज्ञान लाभ किया है, और वही अमूल्य आत्मिक ज्ञान दुनियां को दिया है। इसी ज्ञान का नाम सत्य धर्म का ज्ञान है। इस सत्य ज्ञान को लेकर ही देवात्मा ने सत्य धर्म का ज्ञान दिया है, देव समाज ने न केवल सत्य धर्म का ज्ञान पाया और प्रकाश किया है, किन्तु देव प्रभावों से भरपूर होकर अधिकारी आत्माओं के मिथ्या विश्वासों और पापों को नष्ट करना आरम्भ किया है। यह अनोखा कार्य केवल देव समाज में ही होता है। और किसी जगह हो नहीं सकता। इसलिए मिथ्या और पाप के शोलों में जलते हुए मनुष्यों के लिए यदि कोई आशा और जीवन का स्थान है, तो वह देव समाज है, काश! अधिकारी आत्मा ऐसी अनोखी समाज से अपना सम्बन्ध स्थापन करके अपना अधिक से अधिक कल्याण साधन कर सकें।

माता – पिता संतान दिवस

दिनांक 2.2.2020 को सैक्टर 26, चण्डीगढ़ में होम्योपैथिक मैडिकल कालेज एवं अस्पताल और देवात्मा मैमोरियल फाउंडेशन ने मिलकर माता - पिता संतान दिवस मनाया। प्रतिभागियों के माता - पिता बड़ी भारी गिनती में उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में डा. श्याम सुंदर पटनायक जी ने शिरकत की। इस प्रोग्राम में डा. के. एस. आर्य, डा. संदीप पुरी ने पूरा सहयोग दिया और सराहना की। माता - पिता के संबंध में यह प्रोग्राम अपने आप में अनूठा था। जहाँ आजकल फिल्मी गाने और डांस की प्रतियागिता का चलन है, वहां देवात्मा मेमोरियल फाउंडेशन ने डा. खेड़ा की अगवाई में होम्योपैथिक मैडिकल कालेज एवं अस्पताल के साथ एक अलग ही प्रोग्राम का विमोचन किया। "एक दिवस माता पिता के नाम"। यह कार्यक्रम सिर्फ गाना गाने का नहीं था। यह प्रोग्राम सबको उन भावनाओं में ले जाने का था जो हम सब भूलते जा रहे हैं। इस कार्यक्रम का लक्ष्य फिर से टूटे हुए रिश्तों के तारों को जोड़ना था। माता पिता ओर संतान के संबंधों को फिर से खुशनुमा और प्यार भरा करना था।

इस कार्यक्रम में होम्योपैथिक मैडिकल कालेज एवं अस्पताल के विद्यार्थियों ने माता पिता के संबंध में भजन सुनाये। डा. खेड़ा ने कहा कि माता पिता के लिए बच्चों के साथ अच्छा क्वालिटी समय बिताना बहुत जरूरी है । इससे बच्चा अच्छा मूल्यवान इंसान बनता है।

आजकल बच्चे मोबाइल फोन बहुत देखते है। इसमें माता पिता का कसूर है। माता पिता के पास आजकल बच्चों के लिये समय नहीं है और बच्चे तंग न करें तो उनको मोबाइल फोन देखने को दे देते हैं। इससे बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ता है।

डा. खोड़ा ने कहा कि बच्चों पर हाथ उठाना बहुत गलत बात है। बच्चों की गलती पर हाथ उठाने की बजाय उन्हें प्यार से समझाना चाहिये। डा. खेड़ा ने आज तक अपनी बेटी पर हाथ नहीं उठाया। डा. खेड़ा के परिवार में हमेशा समाज सेवा में विश्वास रखा। देव समाज के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन दे दिया। डा. खेड़ा ने कहा आजकल बच्चे बड़ों का आदर करना भूलते जा रहे हैं और बड़े भी अब अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। भगवान देवात्मा फाउंडेशन के द्वारा डा. खेड़ा ये प्रयत्न कर रहे हैं कि मूल सिद्धांत जो विलुप्त होते जा रहे हैं, उन्हें ऐसे प्रोग्राम के जरिये वापिस लाया जा सकें। भगवान देवात्मा फाउंडेशन का मूल उद्देश्य है:- हृदय में सम्मान भाव, दीनता का भाव, कृतज्ञता का भाव, श्रद्धा का भाव उत्पन्न करना।

शुद्धता भोलापन और निर्मलता एक बच्चे का गहना है। हमें कोई हक नहीं उसे नष्ट करने का। विद्यार्थियों द्वारा तैयार दो नाटक प्रस्तुत किये गये। एक का नाम था - बाप का प्यार, दूसरा था श्रवण कुमार। इन दोनों नाटकों में बच्चों ने बहुत अच्छी एवंम भावानात्मक प्रस्तुति दी। सभी की आँखें नम हो गई।

"बाप का प्यार" में पिता का प्यार और त्याग दिखाया गया जहाँ कि दूसरे नाटक में "श्रवण कुमार" की सेवा भावना के बारे में बताया गया। किस तरह आजकल के बच्चे बड़ों का अनादर करते है, उन्हें प्यार और आदर नहीं देते। इन नाटकों में दर्शाया गया।

एक अच्छा पुत्र कैसे बना जाता है, यह श्रवण कुमार के नाटक में दिखाया गया। इतनी भावपूर्ण प्रस्तुतियां देखकर, पूरा हाल नम आँखें लिये प्रशंसा कर रहा था। बच्चों ने इस प्रोग्राम के जरिये अपने माता-पिता के सामने अपनी गलतियों को स्वीकार करते हुए माफी मांगी।

इस प्रोग्राम के मुख्य अतिथि डा. श्याम सुन्दर पटनायक जी ने कहा, कि ऐसा प्रोग्राम उन्होंने आज तक न सुना, ने देखा है। ऐसे प्रोग्राम की इस दुनिया को देखने की जरूरत है ताकि जिन भारतीय मूल्यों को हम भूलते जा रहे हैं उन्हें बचाया जा सके।

डा. खेड़ा, प्रसिडेंट, देवात्मा मेमोरियल फाउंडेशन ने सभी बच्चों की सराहना की और उन्हें पुरूस्कृत किया।

अपील

धर्म सम्बन्धियों, इस वर्ष में संगरुर में सत्संग में श्रोतागण की संख्या की देखते हुए साधन मन्दिर छोटा पड़ गया, इसलिए यह सोचा गया कि हाल को बनाया जाए, उसके लिए जो धर्म सम्बन्धी धन द्वारा सहयोग कर सकते हैं, वह निम्निलिखित अकांउट में दान डाल सकते हैं।

Shrimati Jamuna Devi Ji Memorial Trust
A/c No. 2488101004207
Canara Bank
Sangrur Branch
IFSC Code : CNRB0002488

भाई भग्नि ब्रत की सभा

26 जनवरी ईतवार के दिन 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ के साधन स्थान में भाई भग्नि के ब्रत की सभा रखी गई। इसमें बहुत से धर्म सम्बन्धी शामिल हुए। पूजनीय भगवान की छवि के आगे सुन्दर फूल रखे गए, फिर एक महिमा विषयक भजन का गान जगदीश जी कुकड़ ने भाव पूर्ण होकर गाया। उसके बाद देव स्त्रोत का गान किया गया और माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बहुत ही गहरे भावों से भरकर देव स्त्रोत की व्याख्या की। फिर गुरू महाराज के दरबार में सहाय प्रार्थना की, उसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित भाई बहनों के सम्बन्ध में भजन का गान किया।

फिर सभापति माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भगवान देवात्मा की सम्बन्धों में शिक्षा का महत्व बताते हुए पूजनीय देव शास्त्र खण्ड-4 में से भाई बहनों के सम्बन्ध में कर्तव्य कर्मों और वर्जित कर्मों का पाठ किया गया और सभापति जी सुन्दर ढंग से उसकी व्याख्या करते रहे। अच्छा मण्डल बन रहा था, फिर श्रीमान जी ने बहन भाईयों के अपने प्रति स्नेह और कुर्बानी का वर्णन किया, उनकी बड़ी बहन केवल 4 वर्ष उनसे बड़ी थी। वह मुश्किल से 1-2 वर्ष के होंगे, गांव के तलाब के पास खेल रहे थे, परन्तु वह फिसल कर तलाब में गिर गए। छोटी सी बहन ने उन्हें बचाने के लिए पीछे तलाब में छलांग लगा दी। अचानक किसी राहगीर ने देख लिया और उन्हें बचा लिया। उन्होंने बताया कि उनकी छोटी बहन भी उनसे बहुत प्यार करती थी और सन्मान भी करती थी। बड़ा भाई मेरी तारीफ करता, विशेषकर जब मैं सन्दूरी रंग की पगड़ी बांधता तो कहता, इस रंग में तुम बहुत सुन्दर लगते हो।

डा० संतिन्द्र ढ़िल्लों :- माता पिता की बड़ी कृपा है जो उन्होंने हमें ऐसे गुरू से जोड़ दिया और सम्बन्ध तत्व की शिक्षा ने हमारे बहन भाईयों के रिश्तों को बहुत मधुर बना दिया है। बड़ी बहन मां की तरह मेरी हर तकलीफ में साथ देती हैं। मेरे ओप्रेशन होने पर मेरे साथ ऐसे हस्पताल में रही। मेरे भाई मुझे बहुत प्यार देते हैं। अपने भाईयों और बहनों को पाकर मैं धन्य धन्य रहती हूँ।

सरजीत बराड़ :- गुरू महाराज को जितना भी धन्यवाद दें थोड़ा है, जिन्होंने सम्बन्धों को इतना मधुर बन दिया। हम सब बहन भाई जिस प्रकार प्यार से रहते हैं और कभी किसी के साथ भी तूं तूं मैं मैं की नौबत नहीं आई, वह इस वातावरण में प्रतिपालित होने के कारण ही है। मेरा बड़ा भाई सब बहनों ओर उनके बच्चों की किसी भी समस्या में सदा सहायता के लिए तत्पर रहता है। मेरी पोती की शादी पर, उनका बहुत महत्त्वपूर्ण टैंडर निकलना था, जिसमें उनकी हाज़री ज़रूरी थी, परन्तु उन्होंने उसकी परवाह नही की और अमरीका पहुँच गए। मेरे भाईयों का सम्बन्ध मेरे बच्चों के साथ भी अपने बच्चों जैसा है। बहुत प्यार करते है और बच्चे भी उन पर जान छिड़कते हैं। छोटा भाई तो माता के देहान्त के बाद मुझे माता ही कहता है। छोटी बहन सतिन्द्र सब बहन भाईयों के लिए कुर्बानी की मूर्ति है। हमारी बड़ी भावजा के बेवक़त देहान्त के बाद उसने भाई को जिस तरह सम्भाला है, उसकी परछाईं बन गई है। अपना आप न्यौछावर किया हुआ है। गुरू महाराज की कृपा से हम सब बहन भाई बहुत स्नेह से रहते हैं।

श्रीमान जगदीश जी :- मुझे विशेष रूप से अपने बड़े भाई के सम्बन्ध में की गुस्ताखी दुखी करती रहती है। जब मुझे सब स्कूलों ने दाखिला देने से इन्कार कर दिया, तो मेरे बड़े भाई मुझे अपने साथ ले गए और अपने पास दाखिल करवा दिया। भाई भावजा ने बहुत सेवा की, परन्तु जब भी मेरी कोई इच्छा पूरी न होती,

तो मैं अपने माता पिता को उनकी शिकायत की चिट्ठी लिख देता, उनकी सब सेवाओं को भूल जाता। अब अपने इस व्यवहार पर बहुत शर्मिंदा हूँ। उनसे क्षमा मांगी है बार 2 क्षमा मांगता हूँ। यह गुरू महाराज की कृपा है। (उनको ब्यान में बहुत व्याकुलता थी और ज़ार ज़ार आंसू बहा रहे थे)

श्रीमान जलधर जी :- मैं गाँव में हल चलाने या ऐसे ही छोटे मोटे काम करता था मेरे चचेरे भाई मधू सूदन जी मुझे अपने साथ चण्डीगढ़ ले आए, मुझे पढ़ाया। मैं बी.ए. हो गया, अच्छी नौकरी मिल गई। यदि यह कृपा न करते तो मैं जाहिल ही रह जाता। इनके इस उपकार का बदला मैं कभी चुका नहीं सकता। मेरा छोटा भाई भी मेरा बहुत ख़्याल रखता हैं।

इस प्रकार इस सारे प्रोग्राम से बहुत सुन्दर वातावरण बना। फिर देव आरती का गान करके चार बार जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम समाप्त हुआ।

शाम को 3154 में ही सुरजीत जी और उनके दोनों भाई, भावजा ओर दोनों बहनें इकट्ठे हुए, फूलों के हारों से एक दूसरे का सम्मान किया और इकट्ठे कुछ खान पान करके इस दिन को सफल किया।

शेष पृष्ठ 2

स्वभाविक प्रतिरोध तैयार किया जा सकता है। दर्शन शास्त्र के अनुसार सेलिगमैन को "खुशी क्रान्ति" का प्रणेता कहा जाता है। उनके अनुसार यदि आप खुश होना चाहते हैं तो लाटरी जीतना, नौकरी पाना, तनख्वाह में बढोतरी, सब भूल जाईए। खुश रहने के लिए अच्छा जीवन वा अर्थ पूर्ण जीवन होता है, वह लोग जो अपनी श्रेष्टतम शक्तियों और सद्गुणों को अच्छे कामों में इस्तेमाल करते हैं, दूसरों की सहायता, सेवा, ध र्म आदि के द्वारा सकारात्मिक कर्म करते हैं तो वही सच्ची खुशी प्राप्त करते है।

यदि फादर डैनियम, फरलोरेंस नाईटिंगेल, मदर, टैरेसा, भक्त पूर्ण सिंह, जैसी आत्माओं को सामने लाएं, तो इन लोगों को जीवन में निराश होने का समय ही नहीं मिला। फकीरी की जिन्दगी जीकर भी वह दुनियां के सबसे खुश इन्सान थे। अपने लिए जीने वा सुख सुविधाओं में पड़कर निक्कमें पड़े रहने से ही निराशा घेरती है। अपने से बाहर निकल कर देखो, किसी गरीब की सहायता कर दो, किसी गरीब अनपढ़ को पढ़ा दो। किसी जरूरत मन्द की कठिनाई को दूर कर दो तो खुशी आपके पैर चूमेगी। हमारा नीच जीवन ही निराशा पैदा करता है। असन्तुष्ट इच्छाएं, अपने सुखों पर चोट लगना, उचित दुख को भी अपने वा दूसरों के भले के लिए ग्रहण न कर सकना निराशा का कारण हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने अपनी आद्वितीय शिक्षा में यह साफ कर दिया है कि हमारा नीच जीवन हमारे लिए दुख और निराशा पैदा करता है। उच्च भाव ही सच्ची खुशी के स्त्रोत हैं। बगैर उच्च वा सात्विक भावनाओं के कोई मनुष्य कितने ही संसारिक पद वा पदार्थ और उपलब्धियां रखता हो, कदाचित सच्ची खुशी का मुंह नहीं देख सकता।

सुरजीत बराड़

संगरूर में विशेष सत्संग
(7.2.2020 से 9.2.2020)

श्रीमान सीता राम जी कालड़ा के परिवार के ज़ोरदार भाव के कारण यह सत्संग 7 से 9 फरवरी तक संगरूर में रखा गया। इससे लाभ उठाने के लिए लखनऊ, चण्डीगढ़, पंचकूला, मल्लेका, गोनियाना, भटिंडा, धूरी, नाभा, जगराओं, फरीदाबाद, कपूरथला, डेराबस्सी आदि स्थानों से धर्म सम्बन्धी पहुँचे। डाक्टर नवजोत जी कालड़ा का सारा परिवार विशेष खुशी प्रगट कर रहा था। श्रीमान सीताराम जी की सारी लड़कियां वा दामाद सब दौड़ दौड़ कर सेवा कर रहे थे। उनके बच्चों ने भी विशेष उत्साह से सेवा में भाग लिया और सभाओं से लाभ उठाया। शहर के कई माननीय डाक्टर साहिबान और एक जज साहिब विशेष रूप से प्रभावित हुए। यह सब विशेष रुचि लेकर सभाओं में योग देते रहे। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी अपनी सेहत बहुत ठीक न होने पर भी अपने दो सहायकों के साथ विशेष भावना से शामिल हुए। यात्रियों के ठहरने और खाने पीने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया।

7 फरवरी रात को 7.30 बजे की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। इस सभा में पूरा मन्दिर हाजरीन से भरा हुआ था। भजन, देव स्त्रोत की सामूहिक व्याख्या, और एक भजन के बाद सभापति जी ने फरमाया कि यह धार्मिक रस्मी सत्संग, दुनिया के और सत्संगों की तरह नहीं है। दिन पर दिन दुनिया में धर्म मतों, धर्म स्थानों, धर्म गुरूयों की गिणती बढ़ रही है, परन्तु पापाचार, अपराध, अपहरण, भृष्टाचार, कतल, आत्मघात, बलात्कार भी बढ़ रहे हैं, बड़े दुख की बात है कि कहलाने वाले धर्म मत कोई कारगर नहीं हो रहे, परन्तु लोग और अधिक मिथ्या में धंसते चले जा रहे हैं। ऐसे वातावरण में यह सत्संग विशेष महत्व रखता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव ग्रहण करके अधिकारी आत्माओं को आत्मा का रूप नज़र आता है आत्मिक अन्धकार दूर होता है। अपने सम्बन्धों में किए दुर्व्यवहार नज़र आते हैं। यदि कोई और भला न भी हो, परन्तु समाज में मैंबर के बनने के लिए जो आठ प्रतिज्ञाएं करवाई जाती हैं यदि सारा संसार इन मोटे पापों से भी बच जाए, तो दुनिया स्वर्ग बन जाए। पशुओं का कत्लेआम समाप्त हो जाए। सभापति जी ने दूर से आए सब यात्रियों का धन्यवाद किया, विशेष करके लखनऊ से आए धर्म सम्बन्धी का, जो ऐसे मौसम में इतनी दूर से आए हैं।

8.2.2020, सुबह 9.00 बजे :- इस सभा के सभापति धर्म सिंह जी चौहान थे। सभापति जी ने डाक्टर नवजोत कालड़ा वा उनके पिता सीता राम जी कालड़ा का धन्यवाद किया, जिनके कारण वह इस शुभ अवसर पर पहुँच सके। अपनी दीनता का प्रकाश करते हुए कहा कि मैं उपदेश देने के लिए नहीं लाभ उठाने के लिए आया हूँ। उन्होंने बताया कि हमारे व्यवहारों से ही हमारे आत्मा में विकार भरता है। गुरू महाराज के देव प्रभावों के बिना यह विकार नज़र नहीं आते। उनके देव प्रभाव अधिकारी आत्माओं को उनके दुर्व्यवहार दिखाते हैं, उनको उनसे शुद्धि के लिए प्रेरित करते हैं। कई सौभाग्यवान जनों में हानि परिशोध के सुन्दर भाव भी पैदा हो जाते हैं।

सभापति जी ने हानि परिशोध को विस्तार से बताते हुए कहा कि हानि परिशोध के चार अंग हैं। सर्वप्रथम किसी जन को अपनी नीच गति नज़र आए, उसको उसके सही रूप में देख सके फिर उसको स्वीकार करे, जैसे जैसे अधिक रोशनी मिलती है तो अधिकारी मनुष्य उसे घृणित रूप में देखकर उस पाप की गति के प्रति घृणा अनुभव करने लगता है। सबसे आवश्यक उच्च दुख है। यह उच्च दुख देवात्मा के देव प्रभावों को प्राप्त करके ही पैदा होता है। यही

कारण है कि जो सच्चे परिशोध देव समाज में पैदा होते है, वह दुनिया में कहीं पैदा नहीं होते।

सभापति जी ने बताया कि पाप की गतियां सूक्ष्म होती हैं, जब मनुष्य किसी का बुरा सोचता भी है तो उससे उसका आत्मिक पतन होता हैं। बुरा बोलकर, किसी का अपमान करके, अवगुण या बुराईयों का किसी के पास वर्णन करके आत्मा का पतन होता है। सभापति जी ने ईसाई मत में Confession और कुछ गीता का भी वर्णन किया।

फिर उन्होंने अपने जीवन में आए परिवर्तन का ब्यान किया। जो उनके भीतर गुरू महाराज के देव प्रभावों के द्वारा हुआ। सभापति जी महसूस कर रहे थे कि अभी बहुत से परिशोध करने बाकी हैं। उन्होंने परिवर्तन के और उदाहरण पेश किए।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने एक धर्म सम्बन्धी की शानदार घटना सुनाई कि एक बाप ने अपने बेटे के बिजली चोरी करने की शिकायत खुद थाने में करवाई और वह चोरी बन्द करवाई। उन्होंने बताया कि देव प्रभावों की दुनिया सच्चे परिशोध की सच्चे धर्म की दुनिया है।

8.2.2020 रात 7.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में उन्होंने ब्यान किया कि सच्ची धार्मिकता मनुष्य को तब ही समझ आ सकती है या पैदा हो सकती है, यदि पहले उसे नैतिकता वा सात्विकता का ज्ञान हो। इसे पैदा करने के लिए देव समाज के सभासदों के लिए प्रतिज्ञाएं रखी गई हैं। इन पाक प्रतिज्ञाओं के द्वारा नैतिकता विकसित होती है। उन्होंने बताया कि सात्विक भावों का विकास ही धर्म की प्राप्ति है। हमदर्दी, शुक्रगुज़ारी और श्रद्धा आदि का नाम लेकर बताया कि दुनिया में इन भावों का अकाल पड़ा हुआ है। शुक्रगुज़ारी का भाव तो ऐसा लगता हे कि इसकी वर्तमानता ही न हो। श्रद्धेय कनल जी फरमाया करते थे कि शुक्रगुज़ारी अपनी अवर्तमानता के कारण ही पहचानी जाती है। कोई भी जन जो धार्मिक होने की इच्छा रखता है, उसके लिए शुक्रगुज़ार होना ज़रूरी है। सभापति जी ने डाक्टर कैली की सुन्दर घटना बताते हुए उन सुनहरी अक्षरों को दुहराया जो उन्होंने अपनी उपकारिणी लेडी के हस्पताल के बिल पर लिखे थे "Already paid in full with a glass of milk" (इस बिल का भुगतान हो गया है उस दूध के गिलास के बदले, जो पहले आपने दिया था) उन्होंने भामाशाह के सुन्दर शुक्रगुज़ार हृदय के भी दर्शन करवाए, जिन्होंने अपना सारा धन अपने उपकारी को अर्पण करके सेना तैयार करवाई और स्वयं सेनापति बनकर कर्ज़ उतारने के लिए लड़े। राजस्थान में मा शाह के नाम के कार्ड जारी किए हुए हैं। जिनके द्वारा राजस्थान के हस्पतालों में मुफ्त ईलाज किया जाता हैं।

सभापति जी के ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमान मेहर सिंह जी के उत्साह और सेवा का ब्यान किया जो यह कहते हैं कि सारे गांव वालों ने इतने जानवर नहीं मारे, जितने मैं अकेले ने मारे हैं। गुरू की कृपा हुई है कि इनके भीतर गुरू मिशन वा धर्म सम्बन्धियों की सेवा करने का भाव है, यह बहुत प्रशंसनीय है।

9.2.2020, सुबह 9.30 :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। श्रीमान जगदीश जी ने सुन्दर भजन का गान किया, फिर देव स्त्रोत का गान वा व्याख्या की गई। सभापति जी ने बहुत सुन्दर भावों से देवगुरू के दरबार में प्रार्थना की। इसके बाद बताया गया कि मनुष्य का सबसे पहला काम अपने आपको जानना है। हम बहुत कुछ जानते हैं परन्तु अपने आपको नहीं जानते। अपने विषय में यदि कुछ जानते है तो यह कि हम बहुत अच्छे है, हम ठीक है, यह सब अपनत्व के कारण है। परन्तु उन्हें देख नहीं सकते। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अध्यात्मिक ज्योति जब हामरे भीतर प्रवेश करती है, तो हमारे

व्यवहारों का प्रकृत रूप दिखाती है। सभापति जी ने अपने एक विद्यार्थी की घटना के विषय में बताया, कि इस वातावरण में आकर कैसे उसे अपने पिता वा पत्नी के सम्बन्ध में दुर्व्यवहार नज़र आए। उसने रो रोकर पिता का धन्यवाद किया। और पत्नी के पैरों में गिरकर दुखी दिल से सबके सामने क्षमा मांगने के लिए मजबूर हो गया। उस सभा में इस दृश्य को देखकर सब अश्रुपात कर रहे थे। बहुत पाक मण्डल बना था। फिर उन्होंने अपने परिवर्तन को बहुत हृदय स्पर्शीय शब्दों में ब्यान किया और गुरू का और अन्य धर्म सम्बन्धियों का धन्यवाद किया, जिनकी कृपा से वह वासना मूलक कोढ़ से बचने और नेक जीवन व्यतीत करने के योग्य हुए। इस ब्यान के बीच में ही कपूरथला के श्रेष्ट सिंह जी बेबस खड़े हो गए कि श्रीमान सीताराम जी बहुत नेक पुरुष थे, उनके हमारे परिवार पर विशेष उपकार हैं। उन्होंने मन्दिर के लिए दान देने का भी प्रण किया।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमान सीता राम जी की सुन्दर जीवन यात्रा के दर्शन कराए। उनका सुन्दर अधिकारी हृदय देवात्मा के देव प्रभाव पाकर निहाल हो गया। वह कच्चा मांस खानेवाले पक्के शाकाहारी बन गए। लड़ाके से दीन बने। जालिम इन्सान से हमदर्द बने। बेहोशी वा बेसुधि से निकल कर माता की सेवा करने वाले बने। पत्नी के हमदर्द साथी बने। अनेक पक्षों में उनका जीवन लहलहाने लगा। वह प्रति वर्ष भाई भग्नि यज्ञ पर अपने भाईयों को अपने घर बुलाकर खाना खिलाते और उपहार देते। देवात्मा वा धर्म सम्बन्धियेां का धन्यवाद करते रहे।

उनका योग्य बेटा और उनकी विशेष धर्म पत्नी, सब लड़कियां, दामाद प्रतिवर्ष उनको याद करते हैं और सत्संग द्वारा उन्हें श्रद्धा के फूल भेंट करते हैं। बहुत सुन्दर दृश्य पैदा होता है। मैं बिमार होकर भी इनके साथ सम्बन्ध में बन्धा हुआ पहुँचा हूँ। यहां आकर ठीक हो गया हूँ। फिर सब पारिवारिक जनों ने श्रीमान सीता राम जी की सुन्दर फोटो पर फूलों के हार और फूल चढ़ाकर उनका सन्मान प्रदर्शन का साधन किया।

सभा के अन्त में जय ध्वनि द्वारा समागम समाप्त हुआ, फिर प्रीतिभोज किया गया।

(एक सेवक)

देवात्मा फरमाते है :-

सुखार्थी मनुष्य साधारणत: कान के बहुत कच्चे होते हैं, वह बड़े बड़े उपकारियों के विरूद्ध सुनी सुनाई बातों से उतेजित होकर उनके शत्रु बन जा हैं। यह इसलिए होता है, कि सुखार्थी जन शुभ को लेकर नहीं चलते। हितकारियों की कीमत को अनुभव नहीं करते। निन्दा करने वाले जन के साथ सम्बन्धित होने के कारण बड़े से बड़े हितकारी जन से फट जाते हैं। यह कान के कच्चे नेचर में किसी किसी सम्बन्ध में भी विश्वास के पात्र नहीं होते। और जिस सबसे बड़े नुकसान के वह भागी बनते हैं, वह यह है कि उनके आत्मिक कल्याण का दरवाजा बन्द हो जाता है। और जिस अपने बहुत बड़े हितकारी में कुछ उपकार पा सकते थे, उस उपकार से भी वंचित हो जाते हैं। अब किसी मनुष्य के लिए लगातार हित का वंचित का द्वार तभी खुला रह सकता है, कि जब वह एक ओर उच्च सिद्धान्तों के साथ वफादार रहने की सामर्थ्य लाभ कर सके और दूसरी ओर अपने बहुत बड़े हितकारियों के साथ अटूट सम्बन्ध स्थापन कर सके। बेशक हम किसी भी विशेष जन के जीवन का अध्ययन करें, तो हमें यह साफ मालूम होगा, कि वह विशेष जन के जीवन का अध्ययन करें, तो हमें यह साफ मालूम होगा, कि वह विशेष जन वहां तक ही विशेष बन गए, जहां तक उनमें उच्च सिद्धान्तों के लिए वफादारी का भाव उत्पन्न हुआ और बढ़ता गया और अपने सच्चे हितकारियों के साथ उनका सम्बन्ध दिनों दिन गहरा और दृढ़ होता गया। यह दो प्रकार के सात्विक भाव हर मनुष्यात्मा को सतीपन की सुन्दर पदवी प्रदान करते हैं, मुबारक हैं ऐसे जन!

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

आइए दोस्ती छोड़ें, नफरत करें.....(आज का नारा)

यह कैसी हवा चल रही है कि हर तरफ नज़र दौड़ाओ तो नफरत ही नफरत है। अखबार का कोई पन्ना या टीवी चैनल ले लें, हर तरफ आक्रोश ही आक्रोश है। चीखते चिल्लाते टीवी एंकर आपकी इंसानियत, आपकी देशभक्ति, आपके वजूद के साबूत मांग रहे हैं। किसी के लाइसेंस कैंसल हो गए, तो कैंसल करने वाले अधिकारी को उसके दफ्तर में घुसकर गोली से मार दिया। किसी से आपसी दुश्मनी है तो एक ही पल में जान ले ली। सड़क पर किसी ने गाड़ी आगे कर ली तो गाड़ी रोककर हॉकी से ऐसे मारा कि बंदा दोबारा डर कर सड़क पर पैदल भी न चले। अपनी हैवानियत और गंदी सोच पर एक मासूम बच्चे से लेकर एक बुजुर्ग महिला तक का बलात्कार अब आम सी बात हो गई है।

आइए दोस्तो, इस नई दुनिया में जहां सिर्फ गुस्सा और तंगदिली है। आज सिर्फ एक ही धर्म चढ़दी कला में है और वो है नफरत और कट्टरपंथी का।

क्यों हमारे समाज में अच्छी और नेक सोच, दोस्ती, सहनशीलता इतनी कमजोर हो गई कि नफरत की सुनामी ने उसे इतनी जल्दी बहा दिया। आदमी का वहशीपन इतनी जल्दी जाग रहा है जबकि अच्छाई को जगाने के लिए उम्र निकल जाती है।

हिंदु धर्म ने अपने लंबे सफर में हर धर्म को अपनाया और शरण दी। गौतम बुद्ध ने मानवता को दुख के कुएं से बाहर निकाला। हमारे सूफी संतों ने (कहलाने वाले) परमात्मा की बंदगी में अपने आप को समर्पित कर दिया। कबीर, मीराबाई, फरीद, गुरू नानक जी सबने भाईचारे, मोहब्बत और एक निरंकार की बात की। हमारे गुरूओं ने सही कदम लिए।

इस पीरों, गुरूओं की धरती में फिर हमने क्यों अपने गुरूओं को निराश किया? माथा टेक के, चढ़ावा चढ़ा कर, हम सोचते हैं कि हम धर्म के ठेकेदार हैं। फिर हम तय करने लग पड़ते है कि कौन क्या खाएगा, कौन क्या बोलेगा और किसे क्या सजा मिलेगी। हम यह भी तय करने लगते हैं कि कौन देशभक्त है और कौन देशद्रोही। भाई आपके पास कोई 'थर्मामीटर' जैसा यंत्र है, जिससे आप मेरे अपने देश के लिए प्यार को नाप पाएंगे?

आज के हिंदुस्तान में आपकी पहचान सिर्फ आपका धर्म करेगा या आपकी इंसानियत? जनाब, जब आपकी जिंदगी का रिपोर्ट कार्ड बनेगा तो उसमें कहीं नहीं लिखा होगा कि आप हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध हैं या जैनी हैं। बस इसी पर नंबर मिलेंगे कि आप कितने अच्छे इंसान थे।

हमारे समाज में नफरत देखकर हमारे (कहलाने वाले) भगवान भी फिक्रमंद है। जैसे एक मां और पिता फिक्रमंद है। जिस मां-बाप का बच्चा तंग दिल, नीच और खुंदकी हो तो वे मां-बाप की भी हार है।

शायद आज हमने अपने भगवान, अपने मां-बाप को ही हरा दिया.....

(दैनिक भास्कर)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts